

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

(ङ) कारकाणि विभक्तयश्च

संस्कृत वाक्यविज्ञान में कारकों और विभक्तियों का बहुत महत्त्व है। जब हम एक संस्कृत पद को दूसरे पद के साथ, वाक्य बनाने के लिए, जोड़ते हैं तो स्वभावतः यह प्रश्न खड़ा होता है कि उन दोनों पदों में सम्बन्ध हो सकता है या नहीं। वाक्य में क्रिया की प्रधानता होती है।

उस क्रिया के सम्पन्न होने के लिए अनेक साधनों का उपयोग होता है। इन साधनों को कारक कहा जाता है। इसलिए संस्कृत व्याकरण में क्रिया से युक्त होने वाले पदार्थों को कारक कहते हैं—**क्रियान्वयि कारकम्, क्रियासम्पादकं कारकम्**। 'पठति' क्रिया है। इसका सम्पादन करने के लिए कोई कर्ता (पढ़ने वाला) चाहिए। पुनः कोई कर्म चाहिए जिसे पढ़ा जाए। वह ग्रन्थ, पत्रिका या लेख हो सकता है। कोई स्थान या अधिकरण चाहिए जहाँ पढ़ा जा रहा हो। वह पुस्तकालय में, घर में या किसी यान में बैठ कर पढ़ सकता है। इसी प्रकार क्रिया के विभिन्न आवश्यक उपकरणों को कारक या साधन कहते हैं। इनकी संख्या छह है—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। संस्कृत में सम्बन्ध और सम्बोधन को साक्षात् क्रियोपकारक न होने से कारक नहीं कहते हैं। यद्यपि अन्य कारकों के समान इनमें भी विभक्तियाँ लगती हैं।

कारकों के लक्षण—

1. **कर्ता** — स्वतन्त्रः कर्ता। जो पदार्थ क्रिया के सम्पादन में स्वतन्त्र रूप से समर्थ है, इस रूप में जिसकी विवक्षा हो रही हो उसे कर्ता कहते हैं। जैसे बालकः धावति, वृक्षः पतति, अग्निः ज्वलति इत्यादि वाक्यों में क्रमशः बालक, वृक्ष और अग्नि स्वतंत्र रूप से क्रिया-सम्पादक है। सामान्यतः कर्ता चेतन होता है किन्तु अचेतन में भी कर्ता होने की स्थिति व्याकरण में स्वीकृत है। इसीलिए वायुः वहति, सूर्यः उदेति जैसे वाक्य होते हैं।
2. **कर्म**—कर्तुरीप्सिततमं कर्म। कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहता है उसे कर्म कहते हैं। यह क्रिया के फल का आश्रय होता है। जैसे रामः ओदनं खादति। कर्म के कई भेद होते हैं। जैसे ईप्सित, अनीप्सित, अकथित, अन्यपूर्वक इत्यादि। कर्मणि द्वितीया-सूत्र से सब से द्वितीया विभक्ति होती है।
3. **करण**—साधकतमं करणम्। क्रिया के निष्पादन में जो सर्वाधिक सहायक माना जाता है उसे

करण कहा जाता है। सामान्यतः इससे तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—कलमेन लिखति। यहाँ कलम लेखन-क्रिया के निष्पादन में सर्वाधिक सहायक है।

4. सम्प्रदान—कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। कर्ता कर्म के द्वारा जिसे संयोजित करता है, वह सम्प्रदान है। सम्प्रदान उद्देश्य के रूप में होता है। जैसे—शिष्याय उपदेशं ददाति। उपदेश द्वारा शिष्य को कर्ता संयोजित करता है। शिष्य उसका उद्देश्य है।

5. अपादान—ध्रुवमपायेऽपादानम्। जब विच्छेद के रूप में क्रिया हो तो जहाँ से विच्छेद आरम्भ होता है (Point of Separation) उसे अपादान कहते हैं। जैसे—वृक्षात् पतति। अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

6. अधिकरण—क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। यह आधार साक्षात् नहीं अपितु परम्परा से होता है। अर्थात् क्रिया के कर्ता और कर्म का आधार अधिकरण होता है। जैसे—वृक्षे वानरः तिष्ठति (यहाँ कर्ता वानर का आधार वृक्ष अधिकरण है)। स्थाल्याम् ओदनं पचन्ति (यहाँ कर्म ओदन का आधार स्थाली अधिकरण है)। इस कारक में सप्तमी विभक्ति लगती है।

कुछ प्रमुख सूत्र पठनीय हैं—

1. कर्मणि द्वितीया — कर्म कारक में सामान्य रूप से द्वितीया विभक्ति होती है यदि वह क्रिया से अनुक्त हो। इसलिए इस सूत्र का पूरा अर्थ है—अनभिहिते (अनुक्ते) कर्मणि द्वितीया। यदि कर्म उक्त हो जाए (जैसा कि कर्मवाच्य में होता है) तो इसमें प्रथमा विभक्ति ही होती है। अनुक्त कर्म के उदाहरण—माता पुत्रं पालयति, बालकः चन्द्रं पश्यति, त्वम् ओदनं खादसि। इन सभी उदाहरणों में कर्तृवाच्य का प्रयोग है। अतः कर्ता तो उक्त है किन्तु कर्म अनुक्त है। उक्त होने का अर्थ है—क्रिया को प्रभावित करना। अनुक्त कारक क्रिया के वचन और पुरुष को प्रभावित नहीं करता। उक्त कर्म का उदाहरण (उदा. कर्मणि प्रथमा)—बालकेन गान्धः दृश्यन्ते, त्वया

रोटिका खाद्यते, अस्माभिः ओदनः रात्रौ न भुज्यते—इन सभी वाक्यों में कर्मवाच्य है। कर्म की प्रधानता है—उसका वचन क्रिया को प्रभावित करता है।

2. उपान्वध्याङ्वसः—यह कर्म कारक का सूत्र है। इसके अनुसार उप, अनु, अधि, आङ्—इन उपसर्गों के बाद वस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है (अधिकरण नहीं)। कर्मसंज्ञा होने से “कर्मणि द्वितीया” के अनुसार द्वितीया विभक्ति लगती है। जैसे—बालकः ग्रामम् उपवसति (बालक गाँव में रहता है)। मम अग्रजः राजमार्गम् अनुवसति (मेरे बड़े भाई सड़क पर रहते हैं)। सेना शिविरम् अधिवसति (सेना शिविर में रहती है)। कृष्णः मथुराम् आवसति (कृष्ण मथुरा में रहते हैं)।

3. साधकतमं करणम्—यह करण कारक का सूत्र है। क्रिया के निष्पादन में कर्ता द्वारा जिसकी सर्वाधिक सहायता ली जाए वह कारक “करण” कहलाता है। अन्य सभी सहायकों के रहने पर भी जिसके आगमन के बाद ही क्रिया की सिद्धि हो, वही करण होता है। साधकतम का यही अर्थ है—प्रकृष्टोपकारकं कारकं करणम्। जैसे—कुठारेण वृक्षं कृन्तति (कुल्हाड़ी से पेड़ काटता है)। इसी प्रकार, यानेन गच्छति, कलमेन लिखति, पादाभ्यां चलति। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।

4. कर्तृकरणयोस्तृतीया—अनुक्त कर्ता और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। अनुक्त कर्ता केवल कर्मवाच्य और भाववाच्य में ही होता है, जहाँ क्रिया के वचन या पुरुष को प्रभावित करने की क्षमता उसमें नहीं रहती। जैसे—बालकेन स्थीयते (भाववाच्य), त्वया चन्द्रः दृश्यते (कर्मवाच्य), रामेण रावणः हतः (कर्मवाच्य), शिशुना सुप्यते (भाववाच्य)। इन सभी उदाहरणों में कर्ता अनुक्त है, अतः तृतीया विभक्ति लगी है। अनुक्त करण तो सभी वाच्यों में तृतीया ही ग्रहण करता है। जैसे—बाणेन हन्ति, हन्यते। कलमेन लिखति, लिख्यते। यानेन गच्छति, गम्यते

लोचनाभ्यां पश्यति, दृश्यते ।

5. **सहयुक्तेऽप्रधाने**—यह तृतीया विभक्ति का सूत्र है । सह (साथ) या इसके अर्थवाले सार्धम् साकम्, समम् का प्रयोग होने पर अथवा इनका अर्थ ज्ञात होने पर अप्रधान शब्द से तृतीया विभक्ति लगती है । क्रिया से सीधा जुड़ा रहने वाला प्रधान शब्द होता है । उसके साथ अप्रधान शब्द भी रह सकता है । जैसे—सीतया सह रामः गच्छति । यहाँ गच्छति क्रिया में राम प्रधान है कर्ता है । सह के योग से अप्रधान सीता से तृतीया हुई है । इसी प्रकार, पयसा ओदनं खादति यहाँ सह का प्रयोग नहीं है किन्तु ओदन के साथ अप्रधान वस्तु के रूप में पयस् जुड़ा हुआ है इसलिए तृतीया हुई है ।

6. **येनाङ्गविकारः**—जिस एक अंग की विकृति से पूरे अंगधारी की विकृति लक्षित हो, उसे को विशेषण दिया जाए, तो अंग वाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है । जैसे—पादेन खज्जः (पै से लँगड़ा) । विकार एक अंग में है किन्तु खज्ज अंगधारी को कहा जाता है । यदि पैर को ही खज्ज कहें तो वह अभिहित होने से प्रथमा विभक्ति ग्रहण करेगा—पादः खज्जः अस्य । अन्य उदाहरण—चक्षुषा काणः (किन्तु, काणं चक्षुः अस्य) । शिरसा खल्वाटः (किन्तु, खल्वाटं शिरः अस्य) ।

(च) समासानां सामान्यपरिचयः

दो या उससे अधिक पदों को एक साथ रखना (सम्+असनम्) समास कहलाता है । यद्यपि वाक्य में भी ऐसा होता है किन्तु वहाँ सभी पद पृथक् रहते हैं । समास में वे पद एकात्मक हो जाते हैं । उनकी विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं । इसलिए समास की परिभाषा है—**बहूनां पदानाम् एकपदीभावः समासः** । अनेक पदों का एकपद के रूप में बदल जाना समास है । सूर्यस्य उदयः— इस अभिव्यक्ति में दो पद हैं । समास हो जाने पर “सूर्योदयः” एक ही पद बन गया । यहाँ समास है ।

सभी शब्दों का सब शब्दों के साथ योग नहीं हो जाता । समास के कुछ नियम हैं । पदों के बीच अर्थगत सम्बन्ध को लेकर समास के मुख्य चार भेद होते हैं - अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व । तत्पुरुष के भेद कर्मधारय और द्विगु हैं । यही मुख्य समास हैं । फिर भी नञ्, मध्यमपदलोपी, उपपद, प्रादि, अलुक् आदि समास-भेद गौण रूप से हैं । यहाँ मुख्य समासों का परिचय प्राप्त करें ।

1. अव्ययीभाव समास—जब दो शब्द मिलकर अव्यय का रूप ले लें तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं (अनव्ययम् अव्ययं भवति यस्मिन्) । सामान्यतः इसमें पूर्वपद का अर्थ प्रधान होता है अर्थात् वाक्य में क्रिया से साक्षात् सम्बद्ध रहता है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

समस्त पद	विग्रह	अर्थ
प्रतिदिनम्	— दिनं दिनं प्रति	— प्रत्येक दिन
प्रतिग्रामम्	— ग्रामं ग्रामं प्रति	— प्रत्येक गाँव में
यथाशक्ति	— शक्तिम् अनतिक्रम्य	— शक्ति के अनुसार
यथाक्रमम्	— क्रमम् अनतिक्रम्य	— क्रमानुसार
उपकृष्णम्	— कृष्णस्य समीपम्	— कृष्ण के पास
अनुरूपम्	— रूपस्य योग्यम्	— रूप के अनुकूल

2. तत्पुरुष समास—जिस समास में उत्तर पद का अर्थ प्रधान हो उसे तत्पुरुष कहते हैं (उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः) । जैसे गृहपतिः—गृहस्य पतिः (घर का स्वामी) । इसके दो मुख्य भेद हैं—समानाधिकरण (जब विग्रह में दोनों पदों की विभक्तियाँ समान हों) तथा व्यधिकरण (विग्रह करने पर दोनों पदों की विभक्तियाँ भिन्न हों) । समानाधिकरण होने पर इसके कई नाम

भेदों के रूप में स्वतंत्र रूप से माने जाते हैं—कर्मधारय, द्विगु, नञ् आदि ।

व्यधिकरण तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीय से सप्तमी विभक्ति तक धारण करता है ।

अतः विभक्ति के आधार पर इसके भेद होते हैं । जैसे—

गृहं गतः	= गृहगतः (घर गया हुआ)	—	द्वितीया तत्पुरुष
शरणम् आपन्नः	= शरणापन्नः (शरण में आया हुआ)—		द्वितीया तत्पुरुष
धनेन हीनः	= धनहीनः	—	तृतीया तत्पुरुष
अग्निना दग्धः	= अग्निदग्धः	—	तृतीया तत्पुरुष
देशाय हितम्	= देशहितम्	—	चतुर्थी तत्पुरुष
परिवाराय सुखम्	= परिवारसुखम्	—	चतुर्थी तत्पुरुष
चौरात् भयम्	= चौरभयम्	—	पञ्चमी तत्पुरुष
ग्रामात् निर्गतः	= ग्रामनिर्गतः	—	पञ्चमी तत्पुरुष
निम्बस्य वृक्षः	= निम्बवृक्षः	—	षष्ठी तत्पुरुष
कूपस्य जलम्	= कूपजलम्	—	षष्ठी तत्पुरुष
अध्ययने मग्नः	= अध्ययनमग्नः	—	सप्तमी तत्पुरुष
धर्मे निपुणः	= धर्मनिपुणः	—	सप्तमी तत्पुरुष

कर्मधारय समास — इसमें दोनों पद समान विभक्तियों के होते हैं । प्रायः वे विशेषण और विशेष्य के रूप में रहते हैं । जैसे—प्रियं च तत् वचनम् = प्रियवचनम् ।

महान् च असौ पण्डितः = महापण्डितः

रम्या च असौ नदी = रम्यनदी

पुण्या च असौ नगरी = पुण्यनगरी

कर्मधारय समास में कभी-कभी उपमान तथा उपमेय का भी योग होता है। जैसे—

चन्द्रः इव मुखम् = चन्द्रमुखम्

घन इव श्यामः = घनश्यामः

द्विगु समास—तत्पुरुष समास का पूर्वपद यदि संख्यावाचक हो तो इसे द्विगु कहते हैं। जैसे—

त्रयाणां फलानां समाहारः = त्रिफला

पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्

त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी

सप्तानां शतानां समाहारः = सप्तशती

(द्विगु समास कहीं नपुंसकलिंग और कहीं स्त्रीलिंग हो जाता है। इसकी व्यवस्था है।)

नञ् समास—जब नञ् (न) का समास किसी सुबन्त पद के साथ होता है और निषेध अर्थ रहता है तो इसे नञ् समास कहते हैं। व्यञ्जन के पूर्व नञ् का “अ” एवं स्वर के पूर्व इसका “अन्” हो जाता है। जैसे —

न आदिः = अनादिः

न ईश्वरः = अनीश्वरः

न सुन्दरः = असुन्दरः

न प्रियः = अप्रियः

3. **बहुव्रीहि समास**—जिस समास में पूर्व या उत्तर पद का अर्थ प्रधान न होकर किसी अन्य (बाहरी) अर्थ की प्रधानता हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। (अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः)। वह बाहरी अर्थ विशेष्य का काम करता है और बहुव्रीहि समास का पद स्वयं विशेषण बन जाता है। जैसे—

पीताम्बरः = पीतानि अम्बराणि यस्य सः (जिस व्यक्ति के वस्त्र पीले हों । सामान्यतः विष्णु को पीताम्बर कहा जाता है यही रूढ़ अर्थ हो गया है । यहाँ न पीत प्रधान है न “अम्बर” (वस्त्र), अपितु दोनों से जुड़ा हुआ अन्य अर्थ प्रधान है । जब कोई कहे पीताम्बरं पूजयति तो क्रिया का सम्बन्ध न पीत से है न अम्बर से अपितु विष्णु ही पूजन के विषय हैं ।

बहुव्रीहि समास के विग्रह में यं सः, येन सः, यस्य सः इत्यादि लगे रहते हैं । अन्य उदाहरण—

महात्मा = महान् आत्मा यस्य सः = जिसकी आत्मा बड़ी हो ।

जितेन्द्रियः = जितानि इन्द्रियाणि येन सः = जिसने इन्द्रियों पर विजय पर ली है ।

चन्द्रमुखी = चन्द्र इव मुखं यस्याः सा = जिस स्त्री का मुख चन्द्रमा के समान हो ।

यशोधनः = यशः एव धनं यस्य सः = यश ही जिसका धन हो वह व्यक्ति ।

4. द्वन्द्व समास — च (और) के अर्थ में जब सुबन्त पदों का समास होता है इसे द्वन्द्व समास कहते हैं (चार्थे द्वन्द्वः) । इसमें जुड़े हुए सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है । जैसे —

रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ

माता च पिता च = मातापितरौ

गुरुश्च शिष्यश्च ⇒ गुरुशिष्यौ

पत्रं च पुष्पं च फलं च = पत्रपुष्पफलानि

द्वन्द्व समास कभी-कभी समाहार (समूह) के अर्थ में होता है तब यह नपुंसक लिंग एकवचन में होता है । जैसे—

पाणी च पादौ च = पाणिपादम् (हाथ-पैर)

धनुः च शरश्च = धनुःशरम्

गंगा च शोणः च = गंगाशोणम्

समाहार द्वन्द्व संस्कृत की वाग्धारा (मुहावरा) के अनुसार होता है इसीलिए इसके नये उदाहरण नहीं बनते । हिन्दी में भी हाथ-मुँह, हाथ-पैर आदि ऐसे ही समाहार द्वन्द्व हैं ।

अभ्यासः

1. समास का अर्थ उदाहरण के साथ बताएँ ।
2. तत्पुरुष के भेदों का सोदाहरण परिचय दें ।
3. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास बताएँ— यथाशक्ति, प्रतिदिनम्, पाणिपादम्, मातापुत्रौ, चौरभयम् ।
4. सुमेलन करें —

(क) त्रिफला

(i) घन इव श्यामः

(ख) राजपुरुषः

(ii) न आदिः

(ग) अनादिः

(iii) राज्ञः पुरुषः

(घ) घनश्यामः

(iv) त्रयाणां फलानां समाहारः

5. निम्नलिखित विग्रह वाक्यों के समस्त पद लिखें —

(क) रामश्च लक्ष्मणश्च

(ख) माता च पिता च

(ग) यशः एव धनं यस्य सः

(घ) न सुन्दरः

(ङ) न ईश्वरः

(छ) प्रत्ययाः

प्रत्यय उन शब्दांशों को कहते हैं जो निर्धारित धातुओं तथा प्रतिपादिकों से जोड़े जाते हैं। धातु से जुड़ने वाले प्रत्यय “कृत्” या “तिङ्” होते हैं। प्रतिपादिक से जुड़ने वाले प्रत्यय “सुप्” तद्धित या स्त्रीप्रत्यय होते हैं। प्रत्ययों के लगने से मूल शब्द (प्रकृति) का अर्थ बढ़ जाता है। वाक्य में प्रस्तुत होने की क्षमता तो सुप् या तिङ् प्रत्यय लगने से ही होती है। “रामः गच्छति”

रामः सुबन्त है और गच्छति तिङन्त है । इनमें क्रमशः 'सु' और 'ति' प्रत्यय लगे हैं ।

धातु से कृत् प्रत्यय भी लगते हैं । इनके कई भेद हैं । ये प्रत्यय विभिन्न अर्थों में होते हैं । यहाँ निर्धारित प्रत्ययों को हम देखें ।

1. क्त्वा प्रत्यय — यह पूर्वकालिक क्रिया में धातु से लगाया जाता है । एक ही कर्ता से सम्बन्ध जो क्रियाएँ होती हैं तो पूर्वकाल की क्रिया में क्त्वा प्रत्यय लगता है । इसमें "त्वा" बचता है । इसके "त्" का कहीं-कहीं सन्धि के कारण "ट" हो जाता है । जैसे—

बालकः विद्यालयं गत्वा (गम् + क्त्वा) नित्यं पठति । (गम् और पठ् —दोनों का कर्ता बालक है । पूर्वकालिक गम् से क्त्वा लगा है) ।

चन्द्रं दृष्ट्वा (दृश् + क्त्वा) शिशुः प्रसन्नः भवति ।

स गृहेऽपि स्थित्वा (स्था + क्त्वा) दुःखी वर्तते ।

ओदनं भुक्त्वा (भुज् + क्त्वा) जलं पिबति ।

अन्य उदाहरण—

ज्ञा + क्त्वा = ज्ञात्वा (जानकर)

लभ् + क्त्वा = लब्ध्वा (पाकर)

दा + क्त्वा = दत्त्वा (देकर)

वच् + क्त्वा = उक्त्वा (कहकर)

कृ + क्त्वा = कृत्वा (करके)

स्ना + क्त्वा = स्नात्वा (नहाकर)

पा + क्त्वा = पीत्वा (पीकर)

2. ल्यप् प्रत्यय —यह प्रत्यय क्त्वा के अर्थ में ही होता है । उपसर्ग के बाद धातु से क्त्वा नहीं होता है ल्यप् प्रत्यय लगता है । ल्यप् में "य" बचता है । जैसे—

आ + दा + ल्यप् = आदाय (लेकर)

वि + हस् + ल्यप् = विहस्य (हंसकर)

अधि + इ + ल्यप्	=	अधीत्य (पढ़कर)
आ + नी + ल्यप्	=	आनीय (लाकर)
अनु + भू + ल्यप्	=	अनुभूय (अनुभव कर के)
उत् + स्था + ल्यप्	=	उत्थाय (उठकर)
नि + पा + ल्यप्	=	निपीय (पीकर)
उप + गम् + ल्यप्	=	उपगम्य (पास जाकर)

3. तुमुन् प्रत्यय —जब एक क्रिया दूसरी क्रिया के लिए होती है तब धातु से भविष्यत् काल के अर्थ में तुमुन् प्रत्यय लगता है। तुमुन् में तुम् बचता है जिसके त का कहीं-कहीं नियमतः “ट” या “ढ” हो जाता है। जैसे — बालकः पठितुं (पठ् + तुमुन्) गच्छति = लड़का पढ़ने के लिए जाता है।

अहं कार्यं कर्तुम् (कृ + तुमुन्) इच्छामि = मैं काम करना चाहता हूँ। सकना, चाहना, आरम्भ करना इत्यादि क्रियाओं के प्रयोग में अप्रधान क्रिया के रूप में तुमुन् प्रत्यय का मुहावरेदार प्रयोग होता है जैसे—

पठितुम् इच्छति (पढ़ना चाहता है)। (पठ् + तुमुन्)

गन्तुं शक्नोति (जा सकता है)। (गम् + तुमुन्)

प्राप्तुं वाञ्छति (पाना चाहता है)। (उ + आप् + तुमुन्)

रेलयानं चलितुं प्रारभत (रेलगाड़ी चलने लगी)। (चल् + तुमुन्)

अन्य उदाहरण :

कथ + तुमुन् = कथयितुम् (कहने के लिए)

त्यज् + तुमुन् = त्यक्तुम् (छोड़ने के लिए)

नी + तुमुन् = नेतुम् (ले जाने के लिए)

पा + तुमुन् = पातुम् (पीने के लिए)

वच् + तुमुन् = वक्तुम् (बोलने के लिए)

श्रु + तुमुन् = श्रोतुम् (सुनने के लिए)

लिख् + तुमुन् = लेखितुम् (लिखने के लिए)

ज्ञा + तुमुन् = ज्ञातुम् (जानने के लिए)

अभ्यासः

1. निम्नलिखित पदों की व्युत्पत्ति लिखें :

पठितुम्, हसित्वा, लेखितुम्, आदाय, उपगम्य, पातुम्, वक्तुम्, गत्वा

2. सही कथन के आगे (✓) चिह्न तथा गलत कथन के आगे (x) चिह्न लगायें ।

(क) "ल्यप्" प्रत्यय तुमुन् अर्थ में लगता है ।

(ख) धातु से जुड़ने वाले प्रत्ययों को तिङ् कहते हैं ।

(ग) "सुप्" प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़ते हैं ।

(घ) तुमुन् प्रत्यय में "तुम्" बचता है ।

(ङ) "रामः" पद सुबन्त है ।

(च) गच्छति पद सुबन्त है ।

(छ) क्त्वा प्रत्यय पूर्वकालिक क्रिया में धातु से लगाया जाता है ।

निबन्धाः

भारतवर्षम्

अस्माकं देशः भारतवर्षं नाम अस्ति । अयं देशः अतीव विशालः । अस्य उत्तरस्यां दिशि पर्वतराजो हिमालयः । तस्मात् नाना नद्यः प्रभवन्ति । ताभिः भारतस्य उत्तरभूभागः सिच्यते । गङ्गा, यमुना, सरयू, गण्डकी, कोशी प्रभृतयः नद्यः तासु प्रधानाः । भारतस्य दक्षिणभागः पर्वतीयः वर्तते । तत्र नर्मदा गोदावरी, कावेरी, इत्यादयः प्रधानाः नद्यः पूर्वस्मिन् पश्चिमे वा समुद्रे मिलन्ति । पूर्वापर-सागरयोः तटप्रदेशाः मनोरमाः सन्ति । भारते तीर्थनगराणि यथा-काशी, मथुरा, प्रयागः, हरिद्वारम् इत्यादीनि नदीतटे सन्ति । एवमेव औद्योगिक-नगराणि कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई, कानपुर, दुर्गापुर, जमशेदपुर-प्रभृतीनि देशस्य समृद्धिं वर्धयन्ति । अयं देशः ग्रामप्रधानः कृषिप्रधानः च वर्तते । अधुना शनैः शनैः उद्योगाः प्रधानाः भवन्ति । अस्मिन् देशे प्राचीनता नवीनता च सहैव वर्तते इति अस्य विशिष्टता अस्ति ।

हिमालयः

हिमालयो नाम पर्वतः नगाधिराजः । संसारस्य सर्वेषु पर्वतेषु श्रेष्ठः विपुलश्च हिमालयः अस्ति । उच्चतमः पर्वतोऽयम् । अस्माकं प्राचीनेषु ग्रन्थेष्वपि अस्य महिमा गीयते । भारतस्य उत्तरभागे स्थितोऽयं पर्वतराजः बहूनां नदीनाम् उद्गमस्थानं वर्तते । अस्य तुषारैः तृप्ताः ताः उत्तरं भारतं सिञ्चन्ति । हिमालये नाना तीर्थस्थलानि सन्ति यथा गंगोत्तरी, केदारनाथः, बदरीनाथः, वैष्णवीदेवी इत्यादीनि । तत्र प्रतिवर्षं ग्रीष्मे श्रद्धालवः गच्छन्ति । किञ्च हिमालये बहूनि नगराणि अवस्थितानि सन्ति यथा श्रीनगरम्, शिमला, मनाली, मसूरी, नैनीताल, दार्जिलिङ्ग, गंतोक इत्यादीनि । हिमालयः भारतं शत्रुभ्यः शीतेभ्यो वायुभ्यश्च रक्षति । अयं बहूनि भेषजयुक्तान् वनस्पतीन् अस्मभ्यं ददाति । अस्य सम्पूर्णः विशालः परिसरः प्रकृतिदेव्याः क्रीडाभूमिः वर्तते ।

गङ्गानदी

भारतस्य देशस्य सर्वासु नदीषु गङ्गा श्रेष्ठा पवित्रता च मन्यते । इयं पर्वतराजात् हिमालय निर्गम्य उत्तरभारतस्य विविधान् प्रदेशान् उत्तीर्य वंगोपसागरे पतति । अस्यास्तीरे अनेकाः प्राचीन नगर्यः स्थिताः सन्ति यथा-हरिद्वारम्, कानपुरम्, प्रयागः, वाराणसी, पाटलिपुत्रम्, मुद्गलगिरि (मुंगेर), भागलपुरम् इत्यादयः । एतासु नगरीषु प्राचीना सभ्यता संस्कृतिश्च विकसिता अभवत् । गङ्गा हिमालयस्य वनस्पतीनां गुणान् गृहीत्वा जलं धारयति । अतः गुङ्गाजलमिति पावनताया पर्यायः कथ्यते । सा देवनदी इत्यपि कथ्यते । गङ्गास्नानं, गङ्गाजलसेवनं, गङ्गोच्चारणं च देवपूजनवत् पवित्रं मन्यते । कथ्यते च-गङ्गास्मरणमात्रेण पापं नश्यति । किन्तु जनानां स्वदोषेण सम्प्रति तस्य जलं शनैः शनैः प्रदूषितं भवतीति दुःखस्य वार्ता ।

अस्माकं विद्यालयः

अस्माकं विद्यालयः विशालः वर्तते । अस्य प्रसिद्धिः सम्पूर्णक्षेत्रे विद्यते । अत्र प्रधानाध्यापकानां अनुशासनप्रियः विद्यालयस्य विकासाय च निरन्तरं प्रयत्नं करोति । शिक्षकाः स्वस्वकर्मसु कुशलं छात्रेषु लोकप्रियाः सन्ति । अतएव अस्य परीक्षाफलं सदैव उत्कृष्टं जायते । क्रीडाक्षेत्रेऽपि अस्माकाः छात्राः यशः वर्धयन्ति । यदा कदा उत्सवाः समारोहाश्च विद्यालयेऽस्मिन् भवन्ति । तेषु नगरप्रतिष्ठिताः जनाः निमन्त्रिताः भवन्ति । विद्यालये सर्वे कक्षाः स्वच्छाः सन्ति, बाह्यपरिसरश्च निर्मलः अस्ति । विद्यालये एकं प्रशस्तं क्रीडाक्षेत्रमस्ति, हरितदूर्वाच्छन्नं च । छात्राणां सर्वविकासः विद्यालयस्य लक्ष्यमस्ति । स एव विद्यालयः श्रेष्ठो भवति यत्र शिक्षकाः छात्राश्च प्रसन्नं सन्ति । तादृशम् एवास्माकं विद्यागारम् ।

वसन्तऋतुः

भारतवर्षे षड् ऋतवो भवन्ति । तेषु वसन्तः ऋतुराजः अस्ति । चैत्रवैशाखयोः मासयोः वसन्तः जायते । इदानीं न शीतस्याधिक्यं न च ग्रीष्मस्य प्रचण्डता भवति । समशीतोष्णता अयमृतुः सर्वेभ्यो रोचते । सर्वे प्राणिनः वनस्पतयश्च अस्मिन् ऋतौ प्रमुदिताः भवन्ति । वृक्ष-

नवपल्लवाः, नवकुसुमानि च शोभन्ते । वासन्तिकानि सस्यानि क्षेत्रेभ्यः खले (खलिहान में) आनीयन्ते, अन्नातिन च लभ्यन्ते । अतएवः कृषकाः प्रसन्नाः भवन्ति । ऋतुपरिवर्तनेन वसन्ते केचन रोगाः अपि प्रभवन्ति । वसन्तस्य प्राकृतिकं सौन्दर्यं नगरेषु दुर्लभं भवति । नगरोद्यानेषु अथवा ग्रामेषु एवास्य शोभा दर्शनीया भवति ।

मम परिवारः

मम परिवारः ग्रामे (नगरे) निवसति । परिवारे वरिष्ठः सदस्यः मम ज्येष्ठपितृव्यः वर्तते । ततः मम पिता वर्तते यः प्रशासनसेवायां कार्यं करोति । (मम पिता ग्रामे निवसन् कृषिकार्यं करोति) मातापि परिवारे गृहकार्याणि करोति । मम ज्येष्ठपितृव्यः सर्वान् परिवारसदस्यान् रक्षति । स्वयं च गृहाद् बहिः कक्षे निवसति । तस्य आज्ञां सर्वे पालयन्ति । मम परिवारे एका स्वसा वर्तते । मम अनुजः इदानीं प्राथमिक-कक्षायां पठति । स्वगपि तत्रैव पठति । गृहे एका सवत्सा धेनुः विद्यते । तस्याः सेवां सर्वे कुर्वन्ति । मम परिवारः अतीव सुखी वर्तते । सर्वे जनाः सन्तुष्टाः तिष्ठन्ति ।

ग्रामजीवनम्

भारतवर्षं ग्रामप्रधानो देशः । यद्यपि अधुना नगराणि अतीव त्वरया विकासशीलानि सन्ति तथापि ग्रामाः अद्यापि प्रचुराः वर्तन्ते । ग्रामे जीवनं प्रायेण स्वाभाविकं वर्तते न तु कृत्रिमम् । ग्रामे कूपाः सरोवराः नद्यः वा जलस्य साधनानि सन्ति । तत्र कृत्रिमाणि जलसाधनानि न सन्ति । तत्र कृषिः बहूनां जीवनस्य साधनमस्ति । कृषिकार्यं कठिनं भवति । अतएव ग्रामे सर्वे परिश्रमशीलाः जनाः सन्ति । अपि च ग्रामे शुद्धः वायुः, शुद्धं जलं च सुलभम् । अतः स्वास्थ्यं तत्र स्वभावतः वर्तते । यद्यपि आधुनिकानि वैज्ञानिकानि उपकरणानि ग्रामे सर्वत्र न सन्ति तथापि ग्रामीणः जनाः सन्तुष्टाः दृश्यन्ते । अधुना प्रशासनं सक्रियं वर्तते । ग्रामेऽपि नगरसुविधाः गच्छेयः तदा ग्रामात् पलायनं न भविष्यति ।

पत्रलेखनम्

आवेदनपत्रम्

1. विद्यालय में प्रवेश पाने के लिए प्रधानाध्यापक को ।

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहाभागाः

.....विद्यालयः/महाविद्यालयः

(स्थाननाम) ।

महोदयाः,

सविनयं निवेदनं वर्तते यत् अहं विद्यालयात् दशमकक्षाम् उत्तीर्णवानस्मि । परीक्षाफलं सन्तोषावहं प्रकृष्टं वर्तते । मम पिताः स्थानान्तरणं सम्प्रति नगरेऽस्मिन् जातम् । अत्र भवतां विख्याते (महा) विद्यालये एकादशकक्षायां प्रवेशमिच्छामि । प्रार्थनास्ति यद् भवन्तो महाविद्यालये (महाविद्यालये) तस्यां कक्षायां नामाङ्कनस्य अनुमतिं दातुं कृपां करिष्यन्ति । तदर्थं सर्वदा भवतां कृतज्ञो भविष्यामि ।

दिनाङ्काः

कृपाभिलाषी

भवतां छात्रः

..... (नाम)

2. विद्यालय में समारोह का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र ।

(स्थाननाम)

दिनाङ्कः

प्रिय मित्र.....

सप्रेम नमस्ते ।

तव पत्रं मया अद्यैव प्राप्तम् । सर्वं कुशलं ज्ञातम् । अत्र विद्यालये एकः विशिष्टः समारोहः आयोजितः आसीत् । तस्मिन् विद्यालयस्य अनेके छात्राः शिक्षकैः सह व्यस्ताः आसन् । अहमपि सभायाः अलङ्करणस्य कार्ये नियुक्तः आसम् । समारोहे नगरस्य प्रमुखः अन्ये च विशिष्टाः जनाः आगताः । तेषां भाषणं बहु उत्साहप्रदम् अभवत् । अस्माकं विद्यालयस्य कार्यक्रमस्य ते महतीं प्रशंसां कृतवन्तः । योग्येभ्यः छात्रेभ्यः पुरस्कारा अपि प्रदत्ताः ।

पितृचरणयोः मातृचरणयोश्च मम प्रणामं निवेदय ।

तव सुहृद्

.....(नाम).....

3. परीक्षा-फल के विषय में अपने पिता को पत्र ।

(स्थाननाम)

दिनाङ्कः

पूज्यवर्येषु पितृचरणेषु,

सादरं प्रणामाः ।

अहमत्र सर्वथा सकुशलः । तत्रापि सर्वे कुशलिनः सन्तीति वर्तते मम विश्वासः । विशेषतः इदमेव सूचयितुं पत्रमिदं लिखामि यत् नवमकक्षायाः परीक्षापरिणामः प्रकाशितः । तत्र स्वकक्षायां प्रथमं स्थानं मया लब्धम् । इदानीमधिकेन परिश्रमेणाहं पठामि । अस्मिन् वर्षे दशमकक्षायाः बोर्डपरीक्षा भविष्यति । अतएव तत्र उत्कृष्टं परिणामं प्राप्तुं परिश्रमः अपेक्षितः अस्ति ।

मातृचरणेषु मम प्रणामाः ।

भवतामात्मजः

.....(नाम).....



राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
 भारत - भाग्य - विधाता।
 पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
 द्राविड़ - उत्कल - बंग।
 विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
 उच्छल - जलधि - तरंग।
 तव शुभ नामे जागे,
 तव शुभ आशिष मागे
 गाहे तव जय गाथा।
 जन-गण-मंगलदायक जय हे,
 भारत - भाग्य - विधाता।
 जय हे, जय हे, जय हे,
 जय जय जय जय हे।



बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन लि०, बुद्ध मार्ग, पटना-1
 BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक : सुनैना प्रिंटिंग प्रेस, बैरिया, पटना-7